कृषि पखवाड़ा

खरीफ–2005

कृषि विभाग, मध्यप्रदेश भोपाल

कृषि पखवाड़ा

वैज्ञानिकों की अनुशंसा के आधार पर अधिक लाभदायक फसल कार्यक्रम अपनाने के लिए कृषकों को प्रेरित करने तथा इसे ग्राम के प्राकृतिक संसाधनों के स्वपोषी दोहन और कृषकों को आर्थिक प्राथमिकताओं से जोड़ने में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु प्रत्येक वर्ष रबी एवं खरीफ समय के पूर्व कृषि पखवाड़ो का आयोजन किया जाता है । इस वर्ष खरीफ कृषि पखवाडा का आयोजन दिनांक 15–5–05 से 31–5–2005 तक किया जा रहा है ं।

उद्‌देश्य :–

1. ग्राम की भूमि, जल तथा भौगोलिक स्थिति का आंकलन करते हुए प्राकृतिक संसाधन पर एवं ग्राम के वर्तमान फसल चक्र पर स्टेटस रिपोर्ट तैयार करना।

2. ग्राम के कृषकों के साथ बैठकर, उनकी समस्याओं तथा प्राथमिकताओं की पहचान करना तथा इन समस्याओं एवं प्राथमिकताओं के निराकरण/ क्रियान्वयन के लिये रूपरेखा तैयार करना ।

3. कृषकों की प्राथमिकताओं तथा प्राकृतिक संसाधनों एवं उनके दोहन क्षमता को ध्यान में रखकर वैकल्पिक फसल चक्र तैयार करना/ एवं फसल चक्र निर्धारण के निर्देश देना ।

कार्य विधि

1. कृषि पखवाड़े का आयोजन एक अभियान के रूप में किया जाता है, 15 दिवसीय इस कार्यक्रम में सबसे पहले कृषकों से चर्चा कर ग्रामवार मूलभूत जानकारी एकत्र की जाती है।

2. फसल चक्र पर किसानों से चर्चा करते समय उद्यानिकी फसलों का समावेश किया जाता हैं।

3. ग्रामीण स्तर पर लाभकारी फसल चक्र के संबंध में चर्चा करने के पूर्व विकासखण्डवार फसल चक्र की रूपरेखा तथा जिला स्तर पर वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी, विषय वस्तु विशेषज्ञ, सहायक संचालक उद्यान, परियोजना अधिकारी नेशनल वाटर शेड तथा कृषि महाविद्यालयों / कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों की एक संगोष्ठी आयोजित कर अग्रिम रूपरेखा तैयार की जाती है ।

4. पखवाड़े में कृषकों की भागीदारी अधिक से अधिक हो इसके लिये सघन प्रचार–प्रसार किया जाता है ।

5. कृषि की उपलब्ध अधोसंरचना की जानकारी एकत्र करने, कृषकों की समस्याओं एवं आवश्यकताओं का संकलन करने तथा उपयोगी फसल पद्धति पर चर्चा करने का कार्य कृषि विभाग, उद्यान विभाग, सहकारिता एवं राजस्व विभाग के संयुक्त दल द्वारा किया जाता है।

अपेक्षित परिणाम एवं उपयोगिता

कृषि पखवाड़े का आयोजन कृषकों की समस्याओं के निराकरण, फसल चक्र तैयार कर उसके क्रियान्वयन तथा राज्य स्तर पर कृषि नियोजन के लिए उपयोगी होता है । अतः पखवाड़ा आयोजन से निम्न अपेक्षित परिणाम होगें –

1. ग्राम की भूमि, जल तथा भौगोलिक स्थिति का आंकलन करते हुए प्राकृतिक तथा मानव निर्मित संसाधनों पर समीक्षात्मक रिपोट तैयार की जा सकेगी ।
2. ग्रामीण स्तर पर फसल चक्र पर प्राप्त सुझावों के आधार पर वैकल्पिक व्यवस्था कर नियोजन तथा कार्यक्रम का निर्धारण किया जा सकेगा।
3. कृषकों से प्राप्त समस्याओं को संकलित कर उनके निराकरण हेतु कार्यवाही की जा सकेगी ।
4. खरीफ/रबी के दौरान वैकल्पिक फसल चक्र को अपनाने हेतु एक्शन प्लान तैयार किया जा सकेगा ।

5- विकासखण्ड तथा जिलावार फसल चक्र संबंधी एक्शन प्लान तैयार होकर उस पर कार्यवाही की जा सकेगी।

कृ.मु.भो./106/5000/05 कृषि विभाग मध्यप्रदेश, भोपाल